

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-C

खण्ड 'क'

1. (क) विज्ञान और शिल्पीय विकास की उपलब्धियों में हम विभिन्न मशीनें, यान्त्रिक वाहन, मनोरंजन के टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप आदि और अन्तरिक्ष व नभिय हवाई जहाज, परमाणु अस्त्र को मान सकते हैं। वहीं शिल्पीय विकास भवनों, कलाओं आदि भौतिक सुखों व साधनों में निहित माना जा सकता है।

(ख) असली बुनियाद का आशय मूलभूत अर्थात् जीवन के अन्तिम लक्ष्य मानसिक सुख-शान्ति से है। भौतिकता से हटकर आध्यात्मिकता की ओर विचार करने से है।

(ग) स्वार्थ सिद्धि और केवल भौतिकता में लिप्त रहकर जीवन बिताना सही मानसिकता नहीं है। इससे जीवन व समाज में अराजकता, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था फैलती है। नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन वास्तविक विकास में बाधक बन गया है। समाज में दिन-प्रतिदिन की समस्याएँ बढ़ गयी हैं।

(घ) उदार शिक्षण व सम्पर्क से लोगों में भावनाएँ उदार और व्यापक बनती जा रही हैं वही व्यक्तिगत जीवन में हम अपने आदर्शों में पतन का अनुभव करने लगे हैं। परिणाम स्वरूप अनुकूल विकास के स्थान पर प्रतिकूलता अपना पंजा कसती जा रही है।

(ङ) विज्ञान और अध्यात्म दोनों ही सत्य शोधक हैं। विज्ञान भौतिक जगत में शोध करता है और अध्यात्म आत्मिक-अव्यक्त जगत के तथ्यों व रहस्यों से सम्बन्धित है।

(च) संतुलन का तात्पर्य है कि स्वार्थ और परमार्थ दोनों की सिद्धि का आदर्श रखकर जीवन में एक संतुलन बनाना अर्थात् समान स्तर या महत्त्व देना। यही उचित मानसिकता कार्य व्यवहार को सुचारू रूप से संचालित कर सकती है।

यह संतुलन राष्ट्रीय या भावनात्मक एक का भी पर्याय है। इसी से सामाजिक, सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में नैतिकता और सदाचार की प्रतिष्ठा होगी।

(छ) 'विज्ञान और आध्यात्म'।

(ज) सम + तुलन, आत्म + इक

(झ) प्रतिष्ठित, आध्यात्मिक।

(ञ) मिश्र वाक्य (क्रिया विशेषण)।

2. (क) कवि मनुष्य को निर्भय होकर जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा है। समय की पुकार है कि सतत् उत्साह से आगे बढ़ना होगा और जम जाने से थमना है और वह संभव नहीं, क्योंकि प्रगति मार्ग आगे तो प्रकाशमय है परन्तु पीछे लौटना संभव नहीं है। चुनौतियाँ (जीवन में) आराम नहीं करने देती हैं।

(ख) 'पल-पल समर, नूतन सुमन-शय्या न देगा लेटने, आराम संभव है नहीं जीवन सतत् संग्राम है'

(ग) सुगम शान्त जीवन की चाहना करने पर भी जीवन सफर अद्भूत है, यहाँ विश्राम नहीं, सतत् संघर्ष है। समस्याएँ हैं। चाहे आग हो या बर्फ या कँटीली-नुकीली राहें, सभी मानव को आगे बढ़ते रहने और

निरन्तर संघर्षों से जूझते रहने को मजबूर करती हैं। संघर्ष ही जीवन का पर्याय बन चुका है।

(घ) मनुष्य को परेशानियाँ, कष्ट, समस्याएँ, आकाक्षाएँ सतत ही घेरे रहती हैं। उसकी नियति ही चुनौतियों को स्वीकारना है। भौतिकता के पहलू जो व्यक्त भी हैं उन्हें पूरा कर भी लिया जाये तो अव्यक्त अध्यात्म-पक्ष, मानव को चिन्तन-मनन के लिए प्रेरित करने लगता है और उसके पास खाली समय होता ही नहीं है। हार-जीत का कोई अर्थ ही नहीं है, बस सतत् संग्राम ही जीवन है।

(ङ) मनुष्य को सुख-दुःख परेशानियों से जूझते हुए सदैव ही आगे बढ़ना होगा। जय-पराजय उसके लिए अर्थहीन हैं उसे नित उत्साह व स्फूर्ति से चुनौतियों का सामना करना चाहिए, क्योंकि जीवन संघर्ष है जो सफलता की पराकाष्ठा में परिणित होकर ही रहता है।

खण्ड 'ख'

3. कम्प्यूटर का महत्त्व एवं अपरिहार्यता

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के वरदानों में कम्प्यूटर का स्थान सर्वोपरि बनता जा रहा है। आज चारों ओर कम्प्यूटर ही छाया हुआ है। आज के युग को 'कम्प्यूटर का युग' कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी। यह तीव्र गति से न्यूनतम समय में अधिक-से-अधिक गणना करने में सक्षम है। कम्प्यूटर आज के युग की जरूरत बन गया है। कम्प्यूटर बनाते समय चार्ल्स बेबेज ने सोचा भी न होगा कि यह यंत्र सबकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बन जाएगा। यह एक ऐसा यंत्र है, जो बिजली की शक्ति से संचालित होता है। यह मानव मस्तिष्क की अपेक्षा तीव्र गति से गणना कर सकता है। आजकल की उपभोक्तावादी संस्कृति में ऐसे कम्प्यूटर की आवश्यकता है, जो बिना थके कम समय में अधिक और ठीक-ठीक गणनाएँ कर सके।

व्यावसायिक संस्थानों, सहकारी दफ्तरों, रेलवे व हवाई जहाज के आरक्षण तथा इंजीनियरिंग क्षेत्रों में कम्प्यूटर की सेवाएँ ली जा रही हैं। कम्प्यूटर पर नवीनतम जानकारी उपलब्ध रहती है।

लेखा-विभाग में तो कम्प्यूटर की भूमिका चमत्कारी है। कार्यालयों के आय-व्यय का ब्यौरा, कर्मचारी के वेतन तथा असंख्य खातों का हिसाब कम्प्यूटर में सुरक्षित रहता है। प्राप्तियों को भी कम्प्यूटर पर ही रिकार्ड कर लिया जाता है।

पुस्तक प्रकाशन के कार्य में भी कम्प्यूटर का बहुत बड़ा योगदान है। इससे अतिरिक्त जन्म-पत्री अथवा कुण्डली की आवश्यकता पड़े तो अपनी जन्म-तिथि और समय बताइए, कम्प्यूटर ग्रह-नक्षत्रों की स्वयं गणना करके लम्बी-चौड़ी जन्म पत्री प्रस्तुत कर देगा।

कम्प्यूटर के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा बहुत लाभदायक है।

वर्तमान कम्प्यूटर डॉ० हरमन के प्रयासों का अत्याधुनिक विकसित रूप है। आज तो कम्प्यूटर को 'लैपटॉप' के रूप में एक छोटे से ब्रीफकेस में बंद कर दिया गया है जिसे जहाँ चाहें वहाँ आसानी से ले जाया जा सकता है।

कम्प्यूटर आज के युग की अनिवार्यता बन गया है। तथा इसका प्रयोग अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है। बैंक में अधिकारी द्वारा बटन

दबाते ही कम्प्यूटर ग्राहक के खाते का पूरा विवरण स्क्रीन पर ला देता है। रेलवे स्टेशनों पर, हवाई अड्डों पर आरक्षण का कार्य कम्प्यूटर की सहायता से किया जाता है। इसी प्रकार मौसम की जानकारी एकत्रित करने में टेलीफोन या बिजली के बिल बनवाने में, छात्रों की उत्तर पुस्तिकाएँ चैक करने में, स्वास्थ्य परीक्षण करने में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। रक्षा विभाग के लिए तो कम्प्यूटर वरदान बन चुका है। आज के युद्ध तथा हवाई हमले कम्प्यूटर के सहारे जीते जाते हैं। परमाणु विस्फोट करने तथा रक्षा-अनुसंधान में कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण योगदान है। आजकल तो मुद्रण में कम्प्यूटर ने प्रगति उत्पन्न कर दी है। पुस्तकों की छपाई का काम कम्प्यूटर के प्रयोग से अत्यन्त तीव्रगामी तथा सुविधाजनक हो गया है।

4. सेवा में,

निदेशक महोदय,
स्वास्थ्य सेवा विभाग
आगरा (उ०प्र०)।

विषय : नकली औषधियों की बिक्री की समस्या के प्रति ध्यानाकर्षण।

महोदय,

हमारे क्षेत्र में आजकल खुलेआम बिकने वाली नकली औषधियों की समस्या गम्भीर रूप लेती जा रही है।

इस क्षेत्र में प्राइवेट नर्सिंग होम एवं दवा दुकानों का बोलबाला है। रोगी दूर-दूर गाँवों से भी 12-12 घण्टों तक डॉक्टर से मिलने की प्रतीक्षा करते रहते हैं। यहाँ तक की सड़क भी जाम हो जाती है। रोगी प्रायः यहीं की दुकानों से दवा खरीद लेते हैं। चिकित्सक भी यही सलाह देते हैं परन्तु खेद है कि इस दुखमयी कष्टों से निजात दिलाने वाली औषधि अपना सही प्रभाव नहीं दिखा पाती है। इस आड़ में नकली औषधियों का कारोबार रंग पकड़ गया है। यह जनता के लिए बहुत हानिकारक है। समय व पैसों की बरबादी के साथ ही यह जघन्य अपराध भी है।

कृपया आप उचित कार्यवाही हेतु निर्देश देने का कष्ट करें। सहयोग न देने पर अधिकारियों के प्रति भी कठोरता अपेक्षित होगी।

सधन्यवाद।

भवदीय,

क, ख, ग,

27/189, विजय नगर,

लोहामण्डी क्षेत्र, आगरा।

दिनांक :

अथवा

सेवा में,

माननीय सांसद

आगरा क्षेत्र

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मेरे गाँव से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित रेलवे स्टेशन से गाँव तक कोई पक्की सड़क न होने के कारण ग्रामवासियों को अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। चुनावी दिनों में आपने क्षेत्रीय जनता को इस सम्बन्ध में भी आश्वासन दिया था, अब उसे पूरा करने की कृपा करें।

सधन्यवाद।

भवदीय,

ग्रामीण जनता

किरावली क्षेत्र

दिनांक :

5. (i) अखबार एवं पत्रिकाएँ—दो मुद्रित माध्यम हैं।

(ii) भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में खुला।

(iii) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार एक विशेष शैली में लिखे जाते हैं। सर्वप्रथम पैराग्राफ में किसी घटना के महत्वपूर्ण तथ्य की जानकारी दी जाती है, फिर कम महत्वपूर्ण तथ्यों की। यहाँ क्लाइमेक्स सबसे पहले आता है।

(iv) क्या हुआ, कहाँ हुआ, कैसे हुआ, किसके साथ हुआ, कब हुआ तथा क्यों हुआ आदि समाचार-लेखन में छः प्रकार हैं।

(v) स्तम्भ-लेखन में कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने मनचाहे विषय को चुनकर अपनी एक विशेष शैली में नियमित स्तम्भ लिखते हैं।

इसमें लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं।

6. असुरक्षित रेल यात्रा (फीचर)

यातायात के साधनों में रेलों का प्रमुख स्थान है। हमारे देश में रेलों का विकास द्रुत गति से हुआ है। आज रेलों में सामान्य, आरक्षित, ए.सी डिब्बे हर गाड़ी में उपलब्ध हैं। अब रेलों की गति भी पहले की अपेक्षा अधिक हो गयी है। कुछ ही घण्टों में अपने गंतव्य तक पहुँचना सरल हो गया है। रेलों में खाने-पीने की सुविधा भी उपलब्ध है। परन्तु इन गाड़ियों में यात्रा सुरक्षित नहीं रह गयी है। आए दिन गाड़ियों में दुर्घटनाएँ घटित होती रहती हैं। आतंकवादी भी इन रेलों को अपना निशाना बनाने से नहीं चूकते हैं। गुण्डों द्वारा यात्रियों को लूटने व उनकी हत्या के समाचार देखने को मिलते हैं। महिलाओं के साथ दुराचार व बलात्कार की घटनाएँ यदा-कदा ही सुनाई पड़ती हैं। यद्यपि रेल प्रशासन ने गाड़ियों में सशस्त्र पुलिसकर्मियों की भी व्यवस्था की है, परन्तु घटनाएँ तो उनके होते हुए भी होती रहती हैं। पुलिसकर्मी अपनी ड्यूटी निष्ठापूर्वक नहीं करते हैं, घटना के घटित होने पर वे कुछ सक्रिय अवश्य होते दिखाई देते हैं, परन्तु घटनाओं में कमी नहीं हो पा रही है। अतः यात्री रामभरोसे अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करते हैं और पहुँचकर राहत की साँस लेते हैं। रेल प्रशासन को इस ओर विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता है। गाड़ियों में सुरक्षा के लिए कठोर कदम उठाने चाहिए।

अथवा

परीक्षाएँ प्रारम्भ होने के दिन परीक्षा केन्द्र का माहौल

आज बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने का प्रथम दिन है। नगर के प्रायः सभी विद्यालयों को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। अतः प्रत्येक परीक्षा-केन्द्र पर काफी हलचल है। केन्द्र व्यवस्थापकों द्वारा अपने विद्यालय में परीक्षाओं के सफल एवं सुचारू संचालन हेतु सभी आवश्यक कदम उठाये गये हैं। कमरों में फर्नीचर, प्रकाश व जल की व्यवस्था की गयी है। कमरों के बाहर छात्रों के अनुक्रमांक की सूची लगा दी गयी है। गेट पर अध्यापकों को लगाया गया है ताकि वे छात्रों की तलाशी लेकर ही अन्दर प्रवेश करने दें। छात्रों के स्कूटर व साइकिलों को खड़ा करने के लिए स्टैंड की व्यवस्था की गयी है। छात्र अपने-अपने वाहनों से आने लगे हैं। वे आपस में बातचीत में संलग्न हैं। अभिभावक भी वहाँ उपस्थित हैं। अध्यापक, छात्रों को पंक्ति में लगकर अन्दर आने को कह

रहे हैं। घण्टा बज रहा है। छात्र जल्दी में हैं अभिभावक अपने-अपने पाल्यों को छोड़ कर जा रहे हैं। शोर-गुल का वातावरण है। छात्रों की चहल-पहल घण्टे की आवाज, बंद होते ही शान्त हो चुकी है। कमरों के अन्दर छात्र अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुके हैं तथा अध्यापक उन्हें उत्तर पुस्तिका व प्रश्न-पत्र वितरित कर रहे हैं। उत्तर-पुस्तिकाओं पर अपने अनुक्रमांक विषय, दिनांक व विद्यालय का नाम लिख चुके हैं। अध्यापकों के निर्देश पर प्रश्न-पत्र खोलकर छात्र उन्हें पढ़ने में लगे हैं। कक्षाओं में पूर्ण शान्ति है। प्रत्येक छात्र शान्तिपूर्वक प्रश्न-पत्र हल करने में लगा है। कुछ अध्यापक हर कमरे पर अपनी निगाह लगाए हुए हैं ताकि कोई छात्र नकल न कर सके। यह परीक्षा केन्द्र नगर का एक प्रतिष्ठित केन्द्र है। अतः यहाँ की व्यवस्था बड़ी दुरुस्त है तथा माहौल शान्त है। अधिकारीगण यहाँ की व्यवस्था व वातावरण से बेहद खुश हैं। नगर के अन्य परीक्षा केन्द्रों की अपेक्षा यहाँ का वातावरण अभूतपूर्व है।

अथवा

पब्लिक स्कूलों में प्रवेश की समस्या—आलेख

आज शिक्षा का व्यावसायीकरण हो गया है। शिक्षा प्रदान करने के लिए सरकार भी बहुत कुछ खर्च करके निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रही है। किन्तु निजी क्षेत्रों में शिक्षा अत्यन्त महँगी हो गयी है। निर्धन छात्र, जिनके पास मस्तिष्क एवं ज्ञान का भण्डार तथा शिक्षा प्राप्त करने के लिए लगन तो पर्याप्त मात्रा में है किन्तु पर्याप्त धन का सर्वथा अभाव है। ऐसे में उच्च शिक्षा प्राप्त करने की उत्कृष्ट कामना रखने वाले नितान्त निर्धन-वर्ग के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा मात्र एक स्वप्न बनकर रह गयी है। आज चारों ओर पब्लिक स्कूलों की भरमार है। हजारों और लाखों की बातें तो प्रवेश के समय ही हो जाती हैं। मासिक शुल्क भी हजारों में ही होता है जिनके पास धन है, वही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा जिनके पास धन का अभाव है, वे दरिद्रों जैसी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हैं। मजबूरी में उनकी शिक्षा पाने की कामना तथा कुछ कर दिखाने के स्वप्न चूर-चूर हो जाते हैं। पब्लिक स्कूलों में प्रवेश से ऐसे निर्धन परन्तु मेधावी छात्र वंचित रह जाते हैं। सरकार एवं निजी संस्थाओं के द्वारा निर्धन वर्ग को सस्ती दरों पर शिक्षा दी जाए तो राष्ट्र का कल्याण निश्चित है।

खण्ड 'ग'

7. (क) (i) महाजन ने अपने मूल धन और ब्याज को वसूल करने के लिए किसान के बैल कुर्क कर लिए।

(ii) किसान को अपने खुशहाल दिनों की यादें बहुत पीड़ा पहुँचाती हैं, उसके खेत, घर, द्वार, बैल कुर्क कर लिए गए और वह महाजनों को अन्याय करने से रोक नहीं पाया।

(iii) उजरी किसान की प्रिय गाय थी। वह उजले रंग के कारण बहुत सुन्दर लगती थी। उसे किसान से असीम स्नेह था। इसलिए वह दूध दुहने के लिए केवल उसी को अपने पास आने देती थी।

(iv) किसान महाजनों का शिकार बन गया। वह ऋण नहीं चुका पाया और उसके खेत नीलाम कर दिए गए।

(ख) (i) कवि के अनुसार, जिस व्यक्ति के जीवन में प्रतिक्रियाएँ नहीं उठती, जो कष्ट पाकर तड़पता नहीं, जो दैनिक जिन्दगी की दिनचर्या में खप चुका है, जिसके स्वप्न मर चुके हैं, और जिसने ठहराव व मुर्दा शान्ति को ही जीवन मान लिया, वह सबसे अधिक खतरनाक है।

(ii) सपनों के मर जाने का आशय है कि सपने, उम्मीदें, आकांक्षाएँ नहीं पैदा होती इसलिए मनुष्य अपनी दैनिक जिन्दगी से ही संतुष्ट हो गया है।

(iii) चलती घड़ी मनुष्य की निरन्तर प्रगति की द्योतक है। जो व्यक्ति यह जानते हुए भी ठहरे से और जड़ बने रहते हैं वे मृतक के समान हैं।

(iv) 'मुर्दा शान्ति' से आशय—जड़ता और निष्क्रियता के कारण शान्ति। ऐसी शान्ति मृत्यु की द्योतक है।

8. भाव सौन्दर्य—मेहनत का प्रतिफल न मिलना, पुलिस की मार पड़ना खतरनाक है परन्तु लोभवश देशद्रोही ही बन जाना या निर्दोष होने पर बन्दी बनाया जाना अधिक दुःखदायी है। इसके भी ऊपर अन्याय को निर्विरोध सहन करना भी सही नहीं होता। प्रयास रहित मृतकवत व्यवहार (दूरदर्शिता में) सर्वाधिक खतरनाक है।

शिल्प सौन्दर्य—कथन में अधूरापन अति आकर्षक बन पड़ा है। अल्पज्ञानी के लिए जुगनू का प्रतीक बहुत सटीक है। मुट्ठियाँ भींचकर वक्त निकाल लेने (क्रोध व्यक्त न करना) का बिम्ब प्रभावशाली है। कथन में आवेश, जेश व मौलिकता है। सरल शब्दावली का प्रयोग हुआ है। जुगनू की लौ में पढ़ने का आशय साधनहीनता की स्थिति में मरे-मरे से जीना—भाव क्रियाशीलता के लिए प्रेरित करता है।

अथवा

भाव सौन्दर्य—ढलता हुआ सूरज अपनी अन्तिम लाली रूपी मुस्कान के साथ आकाश-गंगा का सौन्दर्य निहारता है। साँझ होते ही आकाश में तारे खिल उठते हैं और लालिमा छिप जाती है।

शिल्प सौन्दर्य—भाषा कोमल, सुमधुर एवं प्रवाहपूर्ण है। प्रकृति का मानवीकरण मनोरम बन पड़ा है। काव्य में सजीवता है।

9. (क) बहन बड़ी उमंग से अपने मायके में आई होगी। उसने सोचा होगा कि पिता के घर जाकर अपने भाइयों-बहनों से मिलूँगी। परन्तु जब पता चला होगा कि छोटा भाई भवानी जेल में है तो उसे बहुत दुःख होगा इस कारण उसने 'बाप के घर' को 'परिताप का घर' कहा है।

(ख) 'चाँद' हमारी आस्था और विश्वास का प्रतीक है। जो हर हत्याकाण्ड के बाद भी वैसा ही बना रहता है। हम हत्याकाण्ड जैसा अत्याचार सहन करके भी अपनी आस्था को डगमगाने नहीं देते। अपनी भावनाओं के स्थायित्व का प्रयास करते हैं।

(ग) 'मुर्दा शान्ति में भर जाने' का अर्थ है—एकदम निष्क्रिय, निठल्ले, जड़ और प्रतिक्रिया शून्य होना क्रान्ति या परिवर्तन की कोई जगह नहीं होती, अतः खतरनाक स्थिति कहीं गयी है।

(घ) कवयित्री सांसारिक पदार्थों व भौतिक मोह को ईश्वर के मार्ग की बाधा मानती है। पूर्ण इन्द्रिय निग्रह कर अपने आराध्य (शिव जी) के चरणों में लीन होना चाहती है और सबको यही संदेश देना चाहती है। परन्तु भौतिक व दैहिक आवश्यकताएँ उनकी साधना मार्ग में लाचारी बन जाती है।

10. (क) लार्ड कर्जन के व्यवहार से उदारता नाममात्र भी नहीं है। यद्यपि उसने अनेक वर्षों तक भारत पर शासन किया। यहाँ मान-सम्मान व शान-शौकत का भोग किया तथापि उससे यह आशा नहीं की जा सकती कि वह यहाँ से जाते समय भारतवासियों के प्रति सद्भावना प्रकट करे, उसकी उन्नति और प्रगति की कामना करें और उसके गौरवशाली रूप को स्वीकार करे।

(ख) लेखक लॉर्ड कर्जन के मुँह से देश व देशवासियों के प्रति सद्भावना व महिमा का गुणगान चाहता है। वह भारतीय प्राचीन संस्कृति का मान स्वीकार करे व उज्ज्वल भविष्य की कामना प्रकट करे।

(ग) भारतवासी हृदय से अत्यन्त दयालु व क्षमावान हैं। वे लाख अत्याचार सहन करने के बावजूद भी अपने प्रति सद्भावना प्रकट करने वाले मनुष्य के सब दोष भूल जाते हैं और उसे क्षमा कर देते हैं।

अथवा

(क) लेखक युवा लोगों को निरन्तर कर्म करने का संदेश देता है। वह कहता है कि भाग्य के भरोसे मत बैठे रहो। 'बिन माँगे मोती मिले' के आधार पर पाने की आशा मत करो बल्कि स्वयं कुछ करो।

(ख) मनुष्य को निरन्तर कर्म करना चाहिए। उन्हें भाग्य के भरोसे नहीं बैठे रहना चाहिए। उनके मन में कुछ करने की हड़प होनी चाहिए। कुछ घटने या होने की संभावना में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना मूर्खता है।

(ग) लेखक ने बचपन को जागृति कहा है। उसने अपने बम्बई के जीवन को भी जागृति का दौर कहा है, क्योंकि इस दौर में लेखक ने बहुत कुछ सीखा है और जाना। बचपन में भी हर मनुष्य हर दिन कुछ न कुछ सीखता और जानता है उसमें अतिरिक्त ऊर्जा रहती है।

11. (क) भारत के पशु हो या मनुष्य, वे अपने संगी-साथियों के साथ गहरा लगाव रखते हैं। चाहे वे आपस में लड़ते-झगड़ते भी हों तो भी उनका परस्पर प्रेम अटूट होता है। एक-दूसरे से विदा होते समय वे दुःख का अनुभव करते हैं। विदाई का समय करुणाजनक होता है।

(ख) यहाँ ईश्वर को तीसरी शक्ति कहा गया है। लेखक के अनुसार लॉर्ड कर्जन की शक्ति और भारतीय जनता की इच्छा से भी प्रबल ईश्वर की शक्ति है, जिसके संकेत पर संसार के सभी कार्यों का

संचालन होता है।

(ग) लेखक के अनुसार स्पीति में वर्षा बहुत कम होती है। यहाँ तक मानसून नहीं पहुँच पाता। इसलिए जब कभी वर्षा हो जाए तो लोग इसे अपना सुखद सौभाग्य मानते हैं। वर्षा के दिन को वे सुख का चिह्न मानते हैं।

(घ) 'पथेर पांचाली' फिल्म की शूटिंग का काम ढाई साल तक इसलिए चला, क्योंकि उस समय लेखक एक विज्ञापन कम्पनी में नौकरी करता था, उनके पास समय व धन दोनों का अभाव था। बीच-बीच में पात्रों, स्थानों आदि की समस्याएँ भी आ जाती थीं।

12. मरुभूमि में पानी की मात्रा को मापने के लिए 'रेजा' शब्द का प्रयोग होता है। इससे धरातल की वर्षा को नहीं बल्कि भीतर समाई वर्षा को मापा जाता है। यदि इस भूमि पर इतना पानी गिरे कि छह अंगुल भीतर तक समा जाए तो उस वर्षा को छह अंगुल रेजो कहा जाएगा। इस माप का कारण है—मरुभूमि की रेत। इस रेत में पानी की बूँदें धरातल पर नहीं टिक पातीं।

13. (i) कुआँ डेढ़-दो सौ हाथ गहरा होता है जिसमें भूतल का खारा पानी मिलता है। कुएँ का मुँह चौड़ा होता है।

कुई का मुँह पतला होता है। यह पचास हाथ तक गहरी होती है। इसमें पानी रिस-रिस कर इकट्ठा होता है। इसमें प्राप्त पानी पीने योग्य होता है।

(ii) लेखिका जब तातुश के घर पहुँची तो उसे पता चला कि वह महिला वहीं काम कर रही है। तातुश ने उस महिला को काम से हटाकर लेखिका को काम पर रख लिया। वह महिला लेखिका के प्रति रोष प्रकट करते हुए गालियाँ देती हुई चली गयी।



